संत अलॉयसियस स्वशासी महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

2025–2026

भाग अ परिचय				
कार्यक्रम प्रमाण पत्र		कक्षा बी ए	प्रथम सेमेस्टर	सत्र 2025–2026
विषयः प्रयोजनमूलक हिंदी				
1	पाठ्यक्रम का कोड			
2	पाठ्यक्रम का शीर्षक	प्रयोजनमूलक हिंदी : संभाषण-कला		
3	पाठ्यक्रम का प्रकार / कोरकोर्स / इलेक्टिव / जेनेरिक इलेक्टिव / वोकेशनल /)	माइनर		
4	पूर्वापेक्षा (यदि कोई हो)	इस कोर्स का अध्ययन करने के लिए, छात्र ने किसी भी संकाय/विषय में कक्षा 12वीं अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की हो।		
5	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियाँ (कोर्स लर्निंग आउटकम) (CLO)	भाषा का उपयोग मनुष्य अपनी इच्छाओं, मनोभावनाओं को व्यक्त करने विचारों के आदान-प्रदान के लिए करता है। वार्तालाप में कम से कम दो व्यक्ति सम्मिलित होते हैं. बना और श्रोता। वार्तालाप या संभाषण के द्वारा विचार-विनिमय करके ही परन्पर बौद्धिक आदान-प्रदान किया जा सकता है। प्रभावी वक्ता के लिए संभाषण-कला में निष्ण होना अत्यंत आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रभावी संभाषण कला के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। जैसे- रामकबा में अंगद-रावण संवाद, महाभारत में श्री कृष्ण के द्वारा दिया गया गीता ज्ञान आदि। जीवन के विभिन्न क्षेत्री में समुचित संबाद-कौशल के अभाव में वांछित उपलब्धियां अर्जित नहीं हो पाती हैं। प्रश्नोत्तर, जांच-पड़ताल, स्वागत-विदाई, शंका समाधान, वाद-विवाद, प्रभावपूर्ण सम्बोधन, मंच संचालन आदि के लिए संभाषण की उचित तकनीक और संभाषण का पर्याप्त अभ्यास आवश्यक है। रुर्णप्रिय और संतुलित भाषा में		

		किए गए संभाषण के माध्यम से ही व्यक्ति का सामाजीकरण होता है। इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थी में व्यक्तिक सामाजिक व व्यावसायिक व्यवहार में प्रभावी संवाद क्षमता विकसित करना है। इस अध्ययन से भाषा के आरोह-अवरोह, त्रुटिमुक्त उच्चारण के साथ विद्यार्थी में वाक् कला विकसित होगी, जिससे विद्यार्थी के लिए रोजगार के समुचित अवसर उपलब्ध होंगे । पाठ्यक्रम के अध्ययन से - 1 विद्यार्थी को संभाषण कला के मूलभूत सिद्धांतों व भाषायी तकनीक का ज्ञान प्राप्त होगा जिससे वह निःसंकोच अपने विचारों को प्रभावी ढंग से प्रकट कर सकेगा। 2 विद्यार्थी संभाषण-कला के विभिन्न रूपों से परिचित होगा जिसमे वह एंकरिंगए कमेंट्रीए अनाउंसमेंट आदि किसी भी विधा के कार्य में निष्णात होकर विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर सकेगा। 3 विद्यार्थी संभाषण कला में निष्णात होकर रेडियोए एफ.एम. रेडियोए दूरदर्शनए टी.वी. चैनलों आदि जनसंचार के विभिन्न उपक्रमों में रोजगर पा सकेगा। 4 राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समूह-संवादए वाद-विवाद एवं गंभाषण में हिंदी भाषा की प्रभावी उपस्थिति दर्ज होगी ताकि विश्व में अग्रगण्य भाषा के रूप में हिंदी की स्थापना हो नत्र।
6	क्रेडिट	04
7	कुल अंक	अधिकतम 30+70 न्यूनतम उत्तीर्ण अंक : 35
भाग ब पाठ्यक्रम की विषयवस्तु		
व्याख्यान की कुल संख्या 60 (प्रति सप्ताह घन्टे में 02)		

इकाई	विषय	व्याख्यान की संख्या
इकाई 1	1. प्रयोजनमूलक हिन्दीः परिचय, विशेषताएँ, महत्त्व एवं विविध रूप 2. संभाषण का अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा 3. भारतीय ज्ञान परंपरा में संभाषण के स्रोत- रामायण में अंगद-रावण संवादः एवं महाभारत में कृष्ण-अर्जुन व युधिष्ठिर-यक्ष संवाद, बुद्ध-आनंद का संबाद आदि । 4. संभाषण के विभिन्न रूपः वार्तालाप, व्याख्यान, वाद-विवाद, एकालाप, अवाचिक अभिव्यक्ति, जन संबोधन । गतिविधियां (निम्न में से किसी एक गतिविधि को संपन्न किया जाना है)- 1. किसी एक संवाद की कक्षा में प्रस्तुति । 2. अवाचिक अभिव्यक्ति (मूक बक्तव्य) का अभ्यास ।	15
इकाई 2	संभाषण कला के प्रमुख उपादान :- यथेष्ट भाषा ज्ञान, मानक उच्चारण, **आरोह-अवरोह एवं बालाघात**, सटीक प्रस्तुति, अन्तराल-ध्वनि (बॉल्यूम) ,वेग लहजा (एक्सेण्ट) आदि। गतिविधियां (निम्न में से किसी एक गतिविधि को संपन्न किया जाना है)- 1. हिंदी के मानक शब्दों के उच्चारण का अभ्यास। 2. अनुच्छेद का वेग एवं लहजे के साथ पाठन।	20
इकाई 3	1 संभाषण कला के विभिन्न रूपः उद्घोषणा कला (अनाउन्समेंट) , संचालन (एंकरिंग) , आंखों देखा हाल (कमेन्ट्री) 2. वाचन कलाः समाचार वाचन (रेडियो, टी.बी.), मंचीय वाचन (कविता, कहानी, व्यंग्य आदि) वाद-विवाद एवं समूह-चर्चा। गतिविधियां (निम्न में से किसी एक गतिविधि को संपन्न किया जाना है)- 1. किसी गतिविधि का आंखों देखा हाल (कमेन्ट्री) का अभ्यास। 2. किसी कार्यक्रम के संचालन (एंकरिंग) का अभ्यास।	10
इकाई 4	1. लोक प्रशासन जनसम्पर्क एवं विपणन के विकास में संभाषण-कला का योगदान । 2. संवादी-भाषा (कनवर्सेशनल लैंग्वेज) के रूप में हिन्दी की भाषिक	

	संवेदना की विवेचना। गतिविधियां (निम्न में से किसी एक गतिविधि को संपन्न किया जाना है)- 1. लोक प्रशासन जनसम्पर्क एवं विपणन से संबंधित संभाषण का अभ्यास। 2. प्रभावी संभाषण के आवश्यक तत्त्वों पर समूह चर्चा ।	20

सार बिंदु (की वर्ड) / टैग: संभाषण, उद्घोषणा, अनाउन्समेंट, आंखों देखा हाल, कमेन्ट्री, संचालन, एंकरिंग, वाक कला. समाचार वाचन, मानक उच्चारण, संवादी-भाषा, वार्तालाप,मंच संचालन, कनवर्सेशनल लैंग्वेज

भाग-स अनुशंसित अध्ययन संसाधन

पाठ्य पुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें, अन्य संसाधन

अनुशंसित सहायक पुस्तकें / ग्रन्थ अन्य पाठ्य संसाधन / पाठ्य सामग्रीः

संदर्भ ग्रन्थ-

1. उपाध्याय, देवनाथ "भाषण-संभाषण" किताब महल, इलाहाबाद, सं-1949
2. व्रजमोहन "भाषा और व्यवहार" वाणी प्रकाशन, दिल्ली, सं-2010
3. मेहता, डॉ. भानुशंकर "बोलने की कला" विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, सं-2011
4. शर्मा, महेश "भाषण कला" प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं-2013
5. शर्मा, यज्ञदत्त "आदर्श भाषण कला" आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, गं-2015

अनुशंसित वेबसाइट एवं डिजिटल संपर्क-सूत्र :

1. www.ndl.iitkgp.ac.in (National Digital Library of India)
2. www.prasarbharti.gov.in
3. http://egyankosh.ac.in/handle/123456789/65405
4 http://ignou.acam Gyankosh
5. https://ugemoocs.inflibnet.ac.in/
6. https://hindivishwa.org/

अनुशंसित समकक्ष ऑनलाइन पाठ्यक्रमः

भाग द - अनुशंसित मूल्यांकन विधियाँ

अनुशंसित सतत् मूल्यांकन विधियाँ

अधिकतम अंक : 100

सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक 30 विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE) अंक: 70		
आंतरिक मूल्यांकनः क्लास टेस्ट सतत व्यापक मूल्यांकन : असाइनमेंट/ प्रस्तुतीकरण (प्रेजेंटेशन) (CCE)		30
आकलन :	अनुभाग (अ): तीन अति लघु प्रश्न (प्रत्येक 50 शब्द) अनुभाग (ब): चार लघु प्रश्न (प्रत्येक 200 शब्द) अनुभाग (स): दो दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 500 शब्द)	70